दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273001
(नैक प्रत्यायित 'B' श्रेणी)
सम्बद्ध
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ : 0551-2334549
फैक्स नं0 : 0551-2334549
: 9792987700
e-mail : dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

दिनांक 20.08.2020

प्रकाशनार्थ

दिनांक 20 अगस्त 2020 गोरखपुर।''युगपुरुष दिग्विजयनाथ जी महराज के राष्ट्रीय पुर्नजागरण में योगदान से प्रेरणा प्राप्त करते हुए हमें आगे चलने की आवश्यकता है। भारतीयता, हिन्दू–हिन्दुत्व, लोक साधना, शिक्षा संस्कार की परिकल्पना जो हमारे ऋषि मुनियों ने देखा था उसे साकार करने की दिशा में महंत दिग्विजयनाथ जी महराज ने समाज को अपना अप्रतिम योगदान दिया है। महराज जी चित्तौड़ से चलकर गोरखपुर आ कर महायोगी के रूप में पूरे समाज को एक नई दिशा प्रदान करने का कार्य किया। शिक्षा परिषद के माध्यम से लगभग 42 संस्थाएँ पुष्पित पल्लवित हो रही है जिसने अपने साथ राष्ट्र भक्तों की एक बहुत बड़ी फौज खड़ा कर दिया। भारत और भारतीयता उनके श्वास में थी। वें कहते थे कि ये वहीं भूमि है जहॉ से एक बार पुनः ज्वार भाटा उठने की आवश्यकता है जो पतोनोन्मुख समाज के लोगों का उत्थान करेगा। महराज जी ने अखण्ड भारत का सर्मथन किया और कभी भी विभाजन का सर्मथन नहीं किया। हिन्दू महासभा के अकेले प्रतिनिधि होने के बावजूद विभिन्न ज्वलंत मुद्दो को लेकर लोकसभा में सदैव सक्रिय रहते थे। हिन्दू और हिन्दुत्व के संबंध में उनका विचार था कि जो अपने त्याग एवं तपस्या के बल से शिवत्व को प्राप्त करनें वाला हो वहीं हिन्दू है। हिन्दुत्व एक सागर है, जिसमें विभिन्न सम्प्रदाय समाहित होते है। यदि हिन्दुत्व समाप्त होगा तो भारत समाप्त हो जायेगा अतः हिन्दुत्व भारतीयता का मूल है। उन्होनें आगे कहा कि यदि हम सम्मानित राष्ट्र के रूप में जीवित रहना चाहते हैं, तो हमारा लक्ष्य अखण्ड भारत होना चाहिए। यह तभी होगा जब हमारा राष्ट्र पूर्ण रूप से हिन्दू राष्ट्र होगा। वास्तव में समाजिक पुर्नजागरण, सास्कृतिक राष्ट्रवाद और देश मे शैक्षिक क्रान्ति का सुत्रपात ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ महराज ने किया तो महंत अवेद्यनाथ महराज ने उनके सपनों को पूरा किया।''

उक्त बातें युगपुरुष ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ जी महराज की 125वीं जंयती वर्ष एवं राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन अवेद्यनाथ जी महराज के जन्म शताब्दी वर्ष की पावन स्मृति पर दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय द्वारा आयोजित सप्तदिवसीय व्याख्यानमाला के प्रथम दिन '**युगपुरुष मंहत दिग्विजयनाथ जी का राष्ट्रीय पुर्नजागरण में योगदान**' विषय पर मुख्य वक्ता प्रो. ईश्वर शरण विश्वकर्मा अध्यक्ष उच्चतर शिक्षा सेवा चयन आयोग ने व्यक्त किया।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो. उदय प्रताप सिंह अध्यक्ष महराणा प्रताप शिक्षा परिषद गोरखपुर, एवं पूर्व कुलपति वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर ने कहा कि महंत जी का मानना था कि शिक्षा राष्ट्रीय विकास का सबल साधन है। राष्ट्रीय विकास से महंत जी का आशय आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास से था। उन्होनें कहा कि महंत दिग्विजयनाथ जी महराज ने अयोध्या में श्री राम मन्दिर निर्माण का जो प्रयास किया था उसको महंत अवेद्यनाथ महराज ने अपने कुशल मार्गदर्शन में आगे बढाया। आज उनके उत्तराधिकारी महंत योगी आदित्यनाथ महराज द्वारा भव्य मन्दिर निर्माण के संकल्प के अन्तिम रूप दिया जाना नाथ पंथ के इस संत परम्परा के तेजस्वी योगदान को दर्शाता है।

प्रस्ताविकी एवं स्वागत भाषण व्याख्यानमाला के संयोजक एसोसिएट प्रो. डॉ. राजशरण शाही एवं आभार ज्ञापन महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. शैलेन्द्र प्रताप सिंह द्वारा किया गया।

उक्त कार्यक्रम में महाविद्यालय के सभी शिक्षक एवं शिक्ष्णेत्तर कर्मचारियों ने सहभाग किया।

डॉ.(शैलेश कुमार सिंह)
प्रभारी, सूचना एवं जनसम्पर्क